Krishna Nand B.A I Hons (1)

प्रश्न → फ्रॉयड (Freud) के स्वप्न सिद्धांत की आलोचनात्मक समीक्षा करें।

Ans → स्वप्न के विभिन्न सिद्धांतो में फ्रॉयड ने स्वप्न की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है तथा स्वप्न का इच्छापूर्ति सिद्धांत प्रतिपादित किया है। (wish fulfilment theory of dream) फ्रॉयड ने अपने सिद्धांत का विस्तृत वर्णन "इन्टरप्रिटेशन ऑफ ड्रीम्स" (Interpretations of Dreams) नाम की पुस्तक में किया है तथा यह बतलाया है कि स्वप्नो का संबंध मनुष्य की प्रवृत्तियों के साथ है।

फ्रॉयड के अनुसार प्रत्येक शारीरिक और मानसिक क्रिया का कारण या अर्थ और महत्व होता है तथा वह मिलत्यपी, यानी लाभकारी होता है इसी प्रतिकल्पना के आधार पर इन्होंने स्वप्न को अर्थपूर्ण, महत्वपूर्ण एवं मिलत्यपी या हितकारी बतलाया है।

फ्रॉयड ने स्वप्न को इच्छापूर्ति माना है इसी लिए स्वप्न के इस सिद्धान्त को इच्छापूर्ति का

Krishna Nand B.A I Hons (2)

~~इच्छापूर्ति का सिद्धान्त कहा जाता है। उसका कहना है~~

" स्वप्न निद्रावस्था की वह अचेतन मानसिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा अचेतन में दमित इच्छाओं की अभिव्यक्ति या संतुष्टि छद्म रूप में होती है।"

फ्रॉयड ने अपने सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करते हुए बताया है कि जागृत अवस्था में 'चेतन मन' के आदर्श भाव प्रतिबंधक का ह्रास करते हैं। अतः व्यक्ति की वैसी इच्छाएँ या अन्य ऐसे संवेगात्मक भाव, जो आदर्श एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रतिकूल होते हैं चेतन प्रतिबंधकों के कारण प्रकट नहीं हो पाते तथा वे अचेतन में दमित हो जाते हैं। पर, व्यक्ति की ये दमित इच्छाएँ अचेतन में निष्क्रिय नहीं रहती, बल्कि सदा चेतन अभिव्यक्ति के लिए सक्रिय रहती है। निद्रावस्था में चेतन मन भी उसी स्थिति में या सुषुप्तावस्था में रहती है। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए अचेतन की दमित इच्छाएँ अपना वास्तविक रूप बदलकर अयथार्थ या अवास्तविक रूप में प्रकट होती है। जिसकी अनुभूति स्वप्न कहलाती है। इसीलिए फ्रॉयड ने स्वप्न को अचेतन का एक राजकीय या शाही मार्ग कहा है। इसे अचेतन का राजकीय या शाही मार्ग इसलिए कहा जाता है कि निद्रावस्था में चेतन प्रतिबंधकों के निष्क्रिय होने के कारण अचेतन की दमित इच्छाओं के प्रकट होने का एक सुनहरा अवसर मिलता है तथा उनका वास्तविक रूप भी अयथार्थ रूप में प्रकट हो जाता है जिससे वे बिना किसी प्रकार के रोक-टोक के स्वप्न के रूप में प्रकट होती है।

फ्रॉयड ने स्वप्न को नींद का रक्षक कहा है। स्वप्न की इस विशेषता को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा है कि नींद की अवस्था में उपाहं की जैविक कामनाएँ, अहं से संतुष्टि की इच्छा रखती है। चूँकि अहं, उपाहं और पराहं के बीच अभियोजन का काम करता है। इसलिए अहं सोतन की सुप्तावस्था को कायम रखने की ओर केंद्रित रहता है जिससे उपाहं की इच्छाएं स्वप्न के रूप में प्रकट हो सके और व्यक्ति की नींद भी न टूटने पाये।

फ्रायड के उपर्युक्त सिद्धांत को स्वप्न के एक उदाहरण से अच्छी तरह स्पष्ट किया जा सकता है। उदाहरण –
"एक गरीब व्यक्ति रात में बिना कुछ खाए सो जाता है और स्वप्न देखता है कि वह किसी बड़े होटल में होटल बॉय का काम करता है और भंडार से भोजन निकालने हेतु जाता है।" इस उदाहरण में स्पष्ट है कि स्वप्न के माध्यम से भूख की प्रेरणा की संतुष्टि हुई है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि उसकी भूख की प्रेरणा वास्तविक रूप में तभी संतुष्ट होगी, जब व्यक्ति की नींद खुल जाय। लेकिन बिना नींद खुले उसका अहं उसकी इस आवश्यकता की प्रतिकात्मक पूर्ति स्वप्न के माध्यम से करता है और उसकी नींद सुरक्षित रह जाती है।

स्वप्न के विषय (Contents of Dream)

स्वप्न में अचेतन की दमित इच्छाएँ छद्म रूप में प्रकट होती है। इस तथ्य की व्याख्या हेतु फ्रायड ने स्वप्न के विषय की चर्चा की है। इनके अनुसार स्वप्न में हम जो कुछ भी प्रत्यक्ष रूप में देखते हैं, वह सब अचेतन के दमित इच्छाओं के प्रतीक होते हैं।